व्याख्यान	विषय	पृष्ठ
	चरित्र के दो प्रकार	६८९
	देशविरति चारित्र किस गृहस्थ को होता है	६८९
	मार्गानुसारी के ३५ नियम	६८९
	मध्यम और उत्तम कोटि के गृहस्थ	६९२
	सम्यक्त्व की धारणा	६९३
	बारह व्रतों के नाम	६९३
	व्रतों के विभाग	६९४
	प्रथम—स्थूल-प्राणातिपात-विरमण-व्रत	६९४
	द्वितीय—स्थूल-मृषावाद-विरमण-व्रत	६९६
	तृतीय—स्थूल-अदत्तादान-विरमण-व्रत	६९६
	चतुर्थ—मैथुन विरमण-व्रत	६९७
	पाँचवाँ—परिग्रह-परिमाण-व्रत	६९७
	छठाँ—दिक्-परिमाण-व्रत	६९७
	सप्तम—भोगोपभोग-परिमाण-व्रत	६९८
	अष्टम—अनर्थदंड-विरमण-व्रत	६९९
	नवम्—सामायिक व्रत	६९९
	दशम्—देशावकाशिक-व्रत	७००
	ग्यारहवाँ—पौषध-व्रत	७००
	बारहवाँ—अतिथि संविभाग-व्रत	७००
	श्रावक की दिनचर्या	७०१
छियालीसवाँ	सम्यक् चरित्र (२)	७०३
	सर्वविरति चारित्र के अधिकारी	७०३
	प्रथम महाव्रत	७०५
	द्वितीय महाव्रत	७०६

व्याख्यान	विषय	पृष्ठ
	पाँच प्रकार के शरीर	६३
	सस्कारों का सचय और उनका सुधार	६४
	वस्तुपाल-तेजपाल का दृष्टान्त	६५
	पुनर्जन्म का हाल सुनानेवाले मिलते हैं	६६
पाँचवाँ	आत्मा की अखण्डता	६८
	आत्मा की व्याख्या	६८
	आत्मा सदा अखण्ड रहता है	६९
	आत्मा सकोच-विस्तार गुणधारी है	६९
	आत्मा देह परिमाण है	७०
	एक शरीर में आत्मा कितनी ?	७३
	लोकाकाश	७५
	लोक का सामान्य परिचय	७५
	आत्मा को फँसानेवाले पुद्गल हैं	७७
	सेठ और जाट का दृष्टान्त	७८
	निद्रा की छाती पर चढ़ बैठनेवाले सेठ का दृष्टान्त	८१
छठाँ	आत्मा की संख्या	८३
	पारसमणि का दृष्टान्त	९४
सातवाँ	आत्मा का मूल्य	९७
	तीन मित्रों का दृष्टान्त	९९
	पुण्यशाली आत्मा का प्रभाव	१०६
आठवाँ	आत्मा का खजाना (१)	१०९
	भील राजा की तीन रानियों का दृष्टान्त	११२
	अक्ल लेनेवाले पदभ्रष्ट मंत्री की कथा	११७
नवाँ	आत्मा का खजाना (२)	१२२
	इलापुत्र का दृष्टान्त	१२८

व्याख्यान	विषय	पृष्ठ
	ज्ञान की आराधना	१३२
	मतिज्ञान के भेद	१३३
	औत्पत्तिकी बुद्धि	१३४
	वैनेयिकी बुद्धि	१३६
	कार्मिकी बुद्धि	१३६
	परिणामिकी बुद्धि	१३७
	श्रुतज्ञान के भेद	१३८
	अवधिज्ञान आदि के भेद	१४०
दसवाँ	आत्मा का खजाना (३)	१४२
	हंस और केशव की बात	१४६
	पुरुषार्थ की प्रतिष्ठा	१५०
	पुरुषार्थ के पाँच दर्जे	१५१
	नियतिवाद की निरर्थकता पर सद्दालपुत्र का दृष्टान्त	१५१
	श्रद्धा	१५४
ग्यारहवाँ	सर्वज्ञता	१५८
	मानव भूत-भविष्यत् और वर्तमान जान सकता है	१६६
बारहवाँ	आत्मज्ञान कब होता है	१७२
	बाँझनी गाय के खरीदार का दृष्टान्त	१७३
	सद्गुरु कैसा हो	१७४
	आत्म-ज्ञान केवल पुस्तको से नहीं मिल सकता	१७५
	गुरु दीपक है	१७६
	लड़के गुरु के पास जायेंगे तो···	१७८
	चार पंडितो की बात	१७९
	मिथ्यात्व का महारोग	१८१

व्याख्यान	विषय	पृष्ठ
तेरहवाँ	आत्मा की शक्ति (१)	१८८
	तीर्थंकर किस भूमि में होते हैं	१८८
	तीर्थंकरों का जन्म और दिक्कुमारियों का आगमन	१८९
	एक प्रासंगिक घटना	१९०
	सौधर्मेन्द्र को जन्म की जानकारी और जाने की तैयारी	१९०
	नाम के मोह पर नरघाजी का किस्सा	१९१
	हरिणैगमेषी की उद्घोषणा और प्रयाण	१९३
	प्रभु को मेरु पर ले जाना	१९३
	मेरु-पर्वत पर स्नात्राभिषेक	१९३
	सौधर्मेन्द्र की शंका और प्रभु द्वारा प्रदर्शित अद्भुत् शक्ति	१९४
	स्नात्राभिषेक की पूर्णाहुति	१९५
	बकरिया सिंह का दृष्टान्त	१९६
	रूपसेन की कथा	१९७
चौदहवाँ	आत्मा की शक्ति (२)	२०४
	बलदेव का बल	२०५
	वासुदेव का बल	२०६
	चक्रवर्ती का बल	२०९
	तपस्वी के बल पर महामुनि विष्णुकुमार की कथा	२११
पंद्रहवाँ	आत्मसुख (१)	२१९
	भौंरे और गुबरीले का दृष्टान्त	२२३
	सेठ-सिठानी की बात	२२७

व्याख्यान	विषय	पृष्ठ
	चक्रवर्ती का भोजन	२३१
सोलहवाँ	आत्मसुख (२)	२३३
	मेढकों से धडा करनेवाले बनिये का दृष्टान्त	२३५
	पंडित और रबारी	२३९
	दान में दिया हुआ धन ही आपका है, इस पर नगर-सेठ का दृष्टान्त	२४३
	आत्मसुख का अनुभव कब होता है	२४५

दूसरा खण्ड : कर्म

सतरहवाँ	कर्म की पहचान	२४९
	ठनठनपाल की बात	२५७
अठारहवाँ	कर्म की शक्ति	२६०
	ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती की कथा	२६३
	चिलातीपुत्र का चमत्कारिक चरित्र	२६५
उन्नीसवाँ	कर्म-बन्धन	२७३
	मूर्त कर्मों का अमूर्त आत्मा पर असर होता है	२७७
	नवतत्त्व और कर्मवाद	२७८
	धर्मी कितने हैं	२८१
	कर्म-बन्धन के कारण	२८३
	मिथ्यात्व	२८४
	अविरति	२८५
	कषाय	२८६
	योग	२८७
	कर्म-कन्ध के प्रकार	२८७
वीसवाँ	योगबल	२९१

व्याख्यान	विषय	पृष्ठ
	योग अर्थात् प्रवृत्ति	२९२
	आत्म-प्रदेश में आन्दोलन किससे होता है	२९३
	योग-स्थानक	२९३
	प्रदेश-बंध	२९४
	प्रकृति-बंध भी योगबल से ही होता है	२९४
	कर्मों की मूल प्रवृत्तियाँ	२९५
	आयुष्य-कर्म का बन्ध कब और कैसे होता है	२९६
	सार्थवाह के पुत्रों की कथा	३००
इक्कीसवाँ	आठ कर्म (१)	३०७
	आठ कर्मों का यह क्रम क्यों	३०८
	ज्ञानावरणीय कर्म	३०९
	दर्शनावरणीय कर्म	३१२
	वेदनीय कर्म	३१४
	मोहनीय कर्म	३१६
	बाबा जी की बात	३१८
	क्रोध	३२२
	मान	३२२
	माया	३२२
	लोभ	३२३
बाइसवाँ	आठ कर्म (२)	३२७
	आयुष्य कर्म	३२७
	मौत चाहनेवाले लकड़हारे की कथा	३२८
	नामकर्म	३३०
	गोत्रकर्म	३३७
	अन्तरायकर्म	३३८

व्याख्यान	विषय	पृष्ठ
तेईसवाँ	अध्यवसाय	३४०
	अध्यवसाय का अर्थ	३४०
	अध्यवसाय की महत्ता	३४०
	प्रसन्नचन्द्र राजर्षि की कथा	३४१
	अध्यवसाय किसको होते हैं	३४५
	अध्यवसायों के परिवर्तन	३४७
	स्थिति-बंध में अध्यवसाय कारणभूत है	३४९
	स्थिति के प्रकार	३४९
	आठकर्मों की स्थिति	३४९
	किसको कैसा स्थितिबंध होता है	३५१
	अध्यवसायों की तरतमता—लेश्या	३५१
	जम्बूवृक्ष और ६ पुरुष	३५२
	लेश्या के विषय में कुछ प्रश्न	३५३
चौवीसवाँ	कर्म का उदय	३५६
	कर्म-बन्धन होता ही रहता है	३५६
	कर्म तुरन्त उदय में नहीं आता	३५६
	आत्मा को आठों कर्मों का उदय होता है	३५७
	अबाधाकाल	३५८
	सत्ता में पड़े हुए कर्मों में परिवर्तन होता है	३५९
	उदय में आता हुआ कर्म किस तरह भोगा जाता है	३५९
	द्रव्यादि पाँच निमित्त	३६१
	कर्म किसी के रोके नहीं रुकते	३६१
	कर्म का प्रभाव अनादि काल से है	३६२
	उदयकाल का प्रभाव	३६३
	मृगापुत्र	३६४

व्याख्यान	विषय	पृष्ठ
	सनातन नियम	३६५
	प्रबल पुण्योदय पर सेठ की बात	३६५
	पुण्य की समाप्ति पर	३६८
	पाप के उदय का समय	३६८
	हित शिक्षा	३७०
पच्चीसवाँ	कर्म की शुभाशुभता	३७१
	आत्मा पर कर्म का प्रभाव पड़ता है	३७१
	कर्म-प्रकृति में शुभाशुभ का व्यवहार	३७२
	शुभ कितनी ? अशुभ कितनी ?	३७२
	चार घातिया कर्मों की ४५ अशुभ प्रकृतियाँ	३७३
	कुबेर सेठ की बात	३७४
	अघातिया कर्मों की ४२ शुभ और ३७ अशुभ प्रकृतियाँ	३७८
	सोने की पाट का उत्पात्	३७८
छब्बीसवाँ	कर्मबन्ध और उसके कारणों पर विचार (१)	३८५
	नमक के चटकारे के कारण प्राण गँवाने वाला श्रीमंत-पुत्र	३८८
	कर्म-बंध के कारण अनादिकालीन हैं	३९०
	कारणों का क्रम सहेतुक है	३९०
	पहला-कारण मिथ्यात्व	३९१
	अगारमर्दकसूरि का प्रबंध	३९२
	मिथ्यात्व और सम्यक्त्व	३९४
	सम्यक् दृष्टि और मिथ्या दृष्टि की करनी में अन्तर	३९४
	दो प्रकार का सम्यक्त्व	३९५
	बंधन और मोक्ष का कारण मन है	३९६

व्याख्यान	विषय	पृष्ठ
	युक्ति से चोर को पकड़नेवाले सेठ की बात	३९७
	मिथ्यात्व को दूर करो	३९६
सत्ताईसवाँ	कर्मबन्ध और उसके कारणो पर विचार (२)	४००
	विरति का अर्थ	४००
	अविरति का त्याग आवश्यक क्यो	४०१
	पाप करने की आजादी भी पाप है	४०२
	तीन प्रकार के पुरुष	४०३
	पाप से दुःख और पुण्य से सुख	४०४
	विरति के दो प्रकार	४०४
	पाप प्रवृत्ति पर भिखारी का दृष्टान्त	४०६
	अठारह पाप स्थानक	४०७
	सुबंधु की कथा	४०८
	कषाय	४०९
	योग	४१३
अट्ठाइसवाँ	कर्म-बध और उसके कारणों पर विचार (३)	४१५
	ज्ञानावरणीय और दर्शनावरणीय कर्म-बंध के कारण	४१७
	मोहनीय कर्मबंध के विशेष कारण	४१८
	सागर सेठ की कथा	४२०
	अन्तराय कर्म-बधन के विशेष कारण	४२५
	वेदनीय कर्म-बंधन के विशेष कारण	४२६
	आयुष्य-कर्म-बधन के विशेष कारण	४२७
	नाम-कर्म का बन्ध करनेवाले विशेष कारण	४३०
	गोत्र-कर्म-बन्धन के विशेष कारण	४३०
उनतीसवाँ	आठ करण	४३२

व्याख्यान	विषय	पृष्ठ
	अठारह नातों की कथा	४३४
तीसवाँ	गुणस्थान (१)	४४४
	गुणस्थान का अर्थ	४४५
	गुणस्थानों की सख्या	४४६
	गुणस्थानों के नाम	४४६
	गुणस्थानों के क्रम	४४७
	(१) मिथ्यात्व गुणस्थान	४४७
	(२) सास्वादन सम्यग्दृष्टि गुणस्थान	४५०
	(३) सम्यग्यमिथ्यादृष्टि गुणस्थान	४५२
	(४) अविरत सम्यग्दृष्टि गुणस्थान	४५३
	श्रेणिक राजा को सम्यक्त्व की प्राप्ति	४५८
एकतीसवाँ	गुणस्थान (२)	४६५
	(५) देश विरति गुणस्थान	४६८
	(६) प्रमत्त सयत गुणस्थान	४७२
	अमात्य तेतली पुत्र की कथा	४७४
	(७) अप्रमत्त संयत गुणस्थान	४७९
	(८) निवृत्तिबादर गुणस्थान	४८१
	शुक्लध्यान के चार प्रकार	४८३
बत्तीसवाँ	गुणस्थान (३)	४८६
	(९) अनिवृत्तिबादर गुणस्थान	४८७
	(१०) सूक्ष्म संपराय गुणस्थान	४८८
	महर्षि कपिल की कथा	४८८
	(१०) सूक्ष्म सपराय गुणस्थान	४९३
	(११) उपशात मोह गुणस्थान	४९४
	(१२) क्षीण मोहन गुणस्थान	४९४

व्याख्यान	विषय	पृष्ठ
	(१३) सयोगिकेवलि गुणस्थान	४९५
	(१४) अयोगिकेवलि गुणस्थान	४९६
तैंतीसवाँ	कर्म की निर्जरा	४९९
	अदृश्य चोर कैसे पकडा गया	४९९
	कर्मों को निकालने का उपाय	५०१
	बारह प्रकार का तप	५०४
	कुछ सूचनाएँ	५०८

तीसरा खण्ड : धर्म

चौंतीसवाँ	धर्म की आवश्यकता	५११
	नंदिषेण मुनि की कथा	५१७
	मानव जीवन—धर्म = ०	५२४
	दुष्ट को आश्रय देने की एक पुरानी कहानी	५२६
पैंतीसवाँ	धर्म की शक्ति	५३०
	बहुमत पर बंदरों की कथा	५३२
	अशरणों का शरण धर्म है	५३५
	धर्म से होनेवाले अनेक लाभ	५३६
	धन चाहिए या धर्म	५३९
	धर्मबुद्धि और पापबुद्धि की बात	५४०
	धर्म की शक्ति अचिंत्य है	५४४
छत्तीसवाँ	धर्म की पहचान	५४५
	धर्म का अर्थ	५४९
	धर्म का लक्षण	५५०
	संत दृढ़ प्रहरी की कथा	५५२
	धर्म की परीक्षा	५५६

व्याख्यान	विषय	पृष्ठ
	सम्यक्त्व का अर्थ	६३७
	सम्यक्त्व के प्रकार	६३८
	सम्यक्त्व के ६७ बोल	६४२
	चार सद्दहना	६४२
	तीन लिंग	६४५
	दस प्रकार का विनय	६४७
	जिन मदिर मे वर्तने के ८४ नियम	६४८
	तीन प्रकार की शुद्धि	६५२
	पाँच प्रकार के दूषण	६५३
सेतालीसवाँ	सम्यक्त्व (३)	६५६
	आठ प्रभावक	६५६
	पाँच भूषण	६६१
	पाँच लक्षण	६६३
	६ यतनाएँ	६६५
	६ आगार	६६५
	६ भावनाएँ	६६६
	६ स्थान	६६७
चौवालीसवाँ	सम्यक् ज्ञान	६६९
	दो प्रवासी	६७२
पैंतालीसवाँ	सम्यक् चारित्र (१)	६८६
	चरित्र की महिमा	६८६
	भवभ्रमण का महारोग	६८७
	मोह आपका कट्टर शत्रु है	६८७

व्याख्यान	विषय	पृष्ठ
	चरित्र के दो प्रकार	६८९
	देशविरति चारित्र किस गृहस्थ को होता है	६८९
	मार्गानुसारी के ३५ नियम	६८९
	मध्यम और उत्तम कोटि के गृहस्थ	६९२
	सम्यक्त्व की धारणा	६९३
	बारह व्रतों के नाम	६९३
	व्रतों के विभाग	६९४
	प्रथम—स्थूल-प्राणातिपात-विरमण-व्रत	६९४
	द्वितीय—स्थूल-मृषावाद-विरमण-व्रत	६९६
	तृतीय—स्थूल-अदत्तादान-विरमण व्रत	६९६
	चतुर्थ—मैथुन विरमण-व्रत	६९७
	पाँचवाँ—परिग्रह-परिमाण-व्रत	६९७
	छठा—दिक्-परिमाण-व्रत	६९७
	सप्तम—भोगोपभोग-परिमाण-व्रत	६९८
	अष्टम—अनर्थदंड-विरमण-व्रत	६९९
	नवम्—सामायिक व्रत	६९९
	दशम्—देशावकाशिक-व्रत	७००
	ग्यारहवाँ—पौषध-व्रत	७००
	बारहवाँ—अतिथि सविभाग-व्रत	७००
	श्रावक की दिनचर्या	७०१
छियालीसवाँ	सम्यक् चरित्र (२)	७०३
	सर्वविरति चारित्र के अधिकारी	७०३
	प्रथम महाव्रत	७०५
	द्वितीय महाव्रत	७०६

अट्ठाईस

व्याख्यान	विषय	पृष्ठ
	तृतीय महाव्रत	७०६
	चौथा महाव्रत	७०६
	पाँचवाँ महाव्रत	७०७
	छठाँ रात्रि भोजन विरमण-व्रत	७०८
	अष्ट प्रवचन माता	७०८
	दश प्रकार का यति-धर्म	७११
	षडावश्यक	७१२
	मृगापुत्र की कथा	७१२
	उपसंहार	७१५